हिंदी

सीखने के प्रतिफल	स्रोत / संसाधन	सप्ताहवार सुझावात्मक/गतिविधियाँ (अध्यापकों के सहयोग से अभिभावकों द्वारा संचालित)
• कहानी, कविता, निबंध आदि पढ़कर लेखन के विविध तरीकों और शैलियों को पहचानते है। • रीति-रिवाज़ों के बारे में मौखिक रूप से अपनी तार्किक समझ अभिव्यक्त करते हैं। • विभिन्न विषयों और उद्दश्यों के लिए लिखते समय उपयुक्त शब्दों, वाक्य संरचनाओं, मुहावरों, लोकोक्तियों, विराम-चिह्नों एवं अन्य वैयाकरणिक इकाइयों, जैसे– काल, क्रिया विशेषण, शब्द-युग्म आदि का प्रयोग करते हैं। • ICT का उपयोग करते हुए भाषा और साहित्य (हिंदी) संबंधी कौशलों को अर्जित करते हैं।	• उदाहरण के लिए एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तक वसंत भाग- 2 से नागार्जुन का निबंध 'हिमालय की बेटियाँ' लिया जा सकता है। संबंधित पाठ के लिए निम्न लिंक को क्लिक करें- http://ncert.nic.in/textbook/textbook. htm?ghvs1=3-20 • संभावित प्रतिफलों एवं विषयवस्तुओं को ध्यान में रखते हुए अन्य निबंध भी लिए जा सकते हैं। एक निबंध को पढ़ते हुए हमें मिलते-जुलते कई निबंधों की समझ विकसित करनी चाहिए। • इस विषय से संबंधित सामग्री के लिए एनसीईआरटी, सीआईईटी की पाठ्यपुस्तक में मौजूद क्यूआर कोड, ई-पाठशाला, एनआरओईआर एवं यूट्यूब पर मौजूद सामग्री भी देख सकते हैं। http://www.ncert.nic.in http://www.ciet.nic.in http://www.swayamprabha.gov.in https://www.youtube.com/channel/UCT0s92hGjqL X6p7qY9BBrSA	• पाठ को पढ़ने से पूर्व भारत के भौतिक मानचित्र (physical map) में हिमालय एवं उससे निकलने वाली नदियोंका रास्ता देखें। खासकर नदियों का उद्गम - स्थल एवं जहाँ जा कर वह समुद्र में मिलती हैं अथवा विलीन हो जाती हैं। • यह लेख 1947 के आस-पास लिखा गया था। तब से लेकर अब तक नदियों में जो मुख्य बदलाव आए हैं - पता करें एवं ऑनलाइन अथवा लिखित रूप से एक फ़ाइल तैयार करें। नदियों के साथ मानवीय रिश्तों में आए बदलावों की ओर भी विद्यार्थियों का ध्यान आकृष्ट करने की आवश्यकता है। • नदियों और हिमालय पर अनेक कवियों ने कविताएँ लिखी हैं, जैसे– गोपाल सिंह ने पाली की कविता 'हिमालय और हम' रामधारी सिंह दिनकर की कविता 'हिमालय' आदि। शिक्षक/शिक्षिकाएँ विद्यार्थियों को ऐसी मिलती-जुलती कविताएँ पढ़ने के लिए प्रेरित करें। • कुछ भाषा की बात की ओर भी ध्यान दें और उस आधार पर समझ बनाने की कोशिश करें, जैसे– राजा-रानी का द्वंद्व समास के रूप में प्रयोग, वेत्रवती नदी का बेतवा हो जाना। (ऐसे ही व्यास, झेलम, चिनाब आदि नदियों का प्राचीन नाम पता करें)। 'उनके खयाल में शायद ही यह बात आ सके'– में '**ही**' शब्द के प्रयोग की ओर ध्यान देना। पाठ में आए विशेष्य और विशेषणों की सूची तैयार करना आदि। • **विराम-चिह्नों का प्रयोग:** कविता और गद्य पाठों में विराम-चिह्नों के उपयोग के अंतर की ओर ध्यान दें। विशेषणों एवं शब्दों के अलग-अलग प्रकारों/भेदों पर भी विचार करें। • कठपुतली के इतिहास के बारे में (लोगों से, इंटरनेट के माध्यम से, लाइब्रेरी आदि के उपयोग से) जानकारी प्राप्त करें। • कविता की संवाद शैली को ध्यान में रखते हुए शिक्षक/शिक्षिकाएँ उपयुक्त आरोह-अवरोह के साथ ICT का उपयोग करते हुए कविता का पाठ करें एवं विद्यार्थियों को भी पाठ हेतु प्रेरित करें। पाठ को रिकॉर्ड कर विद्यार्थियों से इसे समूह में साझा करने के लिए भी प्रेरित करें, ताकि यह गतिविधि रोचक भी बने और एक-दूसरे से सीखने का अवसर भी प्रदान करे। कठपुतली गुस्से से उबली बोली- ये धागे क्यों हैं मेरे पीछे-आगे?

• किसी सामग्री को पढ़ते हुए लेखक द्वारा रचना के परिप्रेक्ष्य में कहे गए विचार को समझकर और अपने अनुभवों के साथ उसकी संगति, सहमति या असहमति के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हैं। • कहानी, कविता, निबंध आदि पढ़कर लेखन के विविध तरीकों और शैलियों को पहचानते हैं। • विभिन्न विषयों और उद्देश्यों के लिए लिखते समय उपयुक्त शब्दों, वाक्य संरचनाओं, मुहावरों, लोकोक्तियों, विराम-चिह्नों एवं अन्य व्याकरणिक इकाइयों जैसे– काल, क्रिया विशेषण, शब्द-युग्म आदि का प्रयोग करते हैं। • ICT का उपयोग करते हुए भाषा और साहित्य (हिंदी) संबंधी कौशलों को अर्जित करते हैं। ***नोट*** • **विषय-वस्तु(थीम)** – परिवेशीय सजगता, मित्रता एवं समता का भाव • **भाषा-कौशल** – समझ के साथ पढ़ना, लिखना, सुनना, बोलना संबंधी कौशलों का विकास।	उदाहरण के लिए एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तक वसंत भाग -2 से भवानी प्रसाद मिश्र की कविता 'कठपुतली' ली जा सकती है। संबंधित पाठ के लिए निम्न लिंक को क्लिक करें- http://ncert. nic.in/textbook/textbook.htm?ghvs 1=4-20 संभावित प्रतिफलों एवं विषयवस्तु को ध्यान में रखते हुए अन्य कविताएँ भी ली जा सकती हैं। एक कविता को पढ़ते हुए हमें मिलती-जुलती कई कविताओं की समझ विकसित करनी चाहिए। संबंधित पाठ को समझने के लिए नीचे दिए गए लिंक को भी देखें। https://www.you tube.com/watch?v =hvpYIU8Btcs https://www.you tube.com/watch?v=P YbzQILK9aI इस विषय से संबंधित सामग्री के लिए एनसीईआरटी, सीआईईटी पाठ्यपुस्तक में मौजूद क्यूआर कोड, ई-पाठशाला, एन.आर.ओई.आर. एवं यूट्यूब पर मौजूद सामग्री भी देख सकते हैं। http://www.ncert.nic.in http://www.ciet.nic.in http://www.swayamprabha.gov.in https://www.youtu be.com/ch annel/UC T0s92hGjqLX 6p7qY9BBrSA	इन्हें तोड़ दो; मुझे मेरे पाँवों पर छोड़ दो। सुनकर बोलीं और-और कठपुतलियाँ कि हाँ, बहुत दिन हुए हमें अपने मन के छंद छुए। मगर... पहली कठपुतली सोचने लगी- ये कैसी-सी इच्छा मेरे मन में जगी? (भवानी प्रसाद मिश्र) • स्वतंत्रता सब को अच्छी लगती है। चाहे 'हम पंछी उन्मुक्त गगन के' की चिड़िया हो या 'कठपुतली' कविता में कठपुतली की भावना। आप भी अपनी ऐसी ही किसी भावना को अपनी 'डायरी' में अभिव्यक्त करें। • शिक्षक/शिक्षिकाएँ भाषा के विशिष्ट प्रयोग की ओर विद्यार्थियों का ध्यान अवश्य आकृष्ट करें, जैसे– काठ और पुतली का मिलकर कठपुतली बनना या हाथ और गोला का मिलकर हथगोला बनना आदि। कविता में शब्दों की जगह बदलकर या पर्यायवाची शब्द रखकर पढ़ने को कहें और कविता में आए बदलावों की ओर ध्यान आकृष्ट करें।